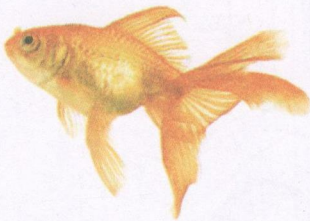


भाग - II



वस्तु चित्रण

(STILL - LIFE)

कला के क्षेत्र में वस्तु चित्रण (Still life) का विशेष महत्व है। Still life दो शब्दों का योग है। Still का अर्थ स्थिर और Life का अर्थ जीवन, अर्थात् स्थिर जीवन। स्थिर, बेजानदार वस्तु ही हो सकती है। अतः Still life में निर्जीव वस्तुओं का चित्रण किया जाता है। कला शिक्षा वस्तु चित्रण से इसलिए आरम्भ होती है क्योंकि जिस वस्तु का हमने चित्रण करना है उसका अनुपात, उसकी आकृति एवं रंग आदि सब सही होना चाहिए, और इसके लिए उस वस्तु की स्थिरता होनी चाहिए ताकि हम काफी देर तक इसका अध्ययन कर सकें। जानदार चीज़ का यदि हम चित्र बनाना चाहें तो वह अधिक देर तक एक ही स्थिति में नहीं रह सकती। वस्तु चित्रण से हमारी गहरी दृष्टि (Observation Power) की शक्ति बढ़ती है जो कि कला में बहुत आवश्यक है। वस्तु चित्रण में जिन आकृतियों का चित्रण होता है उनके बुनियादी आधार निम्नलिखित होते हैं घन (Cube), आयताकार संक्षेत्र (Rectangular Prism), रंभ (Cylinder) गोल (Sphere) और शंकु (Cone)।

वस्तु चित्रण (Still life) करते समय कुछ नियमों का पालन करना आवश्यक है, जिनका विवरण निम्न प्रकार से है:-

1. उचित संयोजना (Good Setting)
2. गहरी दृष्टि (Observation)
3. अनुपात और समानुपात (Ration and Proportion)
4. परिप्रेक्ष्य (Perspective)
5. प्रकाश एवं छाया (Light and Shade)
6. सामान्य प्रभाव (General Impression)

अब क्रमशः प्रत्येक नियम की विस्तृत जानकारी प्राप्त करें।

1. उचित संयोजना (Good Setting) - सर्वप्रथम कार्य आरम्भ करने से पूर्व वस्तु समूह को ध्यान से देखना है कि वस्तु समूह की ऊंचाई अधिक है या लम्बाई। उसी ढंग से कागज़ का प्रयोग होगा यदि वस्तु समूह की ऊंचाई अधिक है तो कागज़ ऊंचाई (Heightwise) में रखा जाएगा। यदि लम्बाई अधिक है तो कागज़ भी लम्बाई (Lengthwise) में प्रयोग होगा। वस्तु चित्रण के लिए पूरे कागज़ का तीन चौथाई ($3/4$) भाग प्रयोग होना चाहिए।

कागज के अनुसार वस्तु चित्रण बहुत छोटा भी नहीं होना चाहिए और बहुत बड़ा भी नहीं। चारों ओर कागज में लगभग 3 सें० मी० हाशिया छोड़ना चाहिए, उसके बाद निचले भाग में हाशिये से ऊपर 3 सेंटीमीटर की दूरी पर आधार रेखा Base line खींचो, और उसके ऊपर वस्तु चित्रण बनाना आरम्भ करो। कागज में दोनों ओर बाँई और दाँई तरफ बराबर जगह छोड़नी चाहिए।

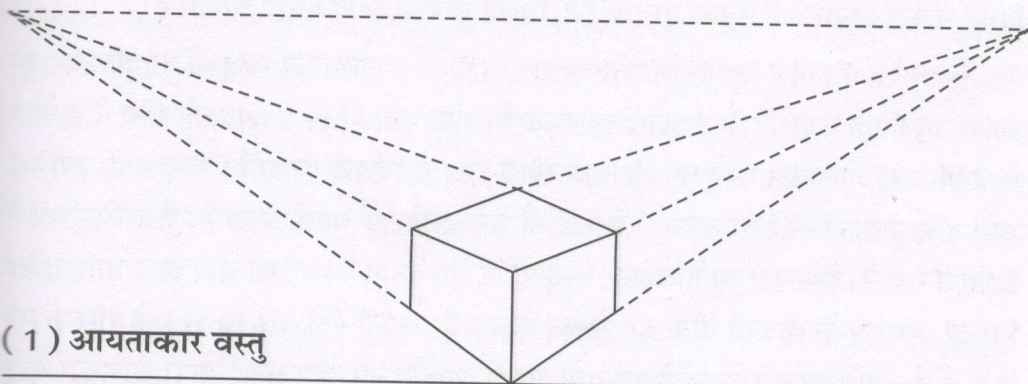
2. गहरी दृष्टि (Observation)— कला में यदि गहरी दृष्टि का पालन अच्छी प्रकार हो गया तो कार्य में सफलता अवश्य मिलेगी। कला छात्र होने के नाते आप जिस वस्तु को भी देखते हो उसको गहरी दृष्टि से देखें, आप लोगों को जब कक्षा में स्मरण शक्ति से कोई चीज़ बनाने के लिए कहा जाता है तो आप उसको बनाने में असमर्थता सी प्रकट करते हो। उसका कारण यह है कि आप लोग अपने आस-पास की वस्तुओं को गहरी दृष्टि से नहीं देखते, उदाहरण के लिए यदि आपको गुलाब का फूल बनाने को कहा जाए, आप प्रायः गुलाब के फूल को विद्यालय आते-जाते देखते रहते हो, फिर भी बनाने में असमर्थ रहते हो क्योंकि सरसरी नज़र से आप ने अवश्य देखा है परन्तु गहरी दृष्टि अर्थात् बनावट कैसी है, पत्ते कैसे हैं, टहनी कैसी है और रंग कैसा है इत्यादि ध्यान से नहीं देखा। यदि आपको गहरी दृष्टि से देखने की आदत होगी तो आप उसकी सही आकृति बना सकते हो, वरना फूल गुलाब का बनेगा, टहनी गेन्दे की और पत्ते सूरजमुखी के। इस प्रकार चित्र बड़ा अजीब लगेगा। इस गहरी दृष्टि (Observation power) को बढ़ाने के लिए ही (Still Life) का अभ्यास करवाया जाता है।

3. अनुपात और समानुपात (Ratio and Proportion)— जब आप वस्तु समूह को गहरी दृष्टि से देखेंगे तो आपको वस्तुओं का अनुपात मालूम करने में बहुत आसानी हो जाएगी। अनुपात (Ratio) का अर्थ है एक वस्तु की लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का सम्बन्ध। समानुपात (Proportion) का अर्थ है एक वस्तु का दूसरे वस्तु से लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का सम्बन्ध। आपने एक ही वस्तु का अपनी लम्बाई, ऊंचाई और चौड़ाई का सम्बन्ध तो ठीक बना लिया परन्तु उस वस्तु का दूसरे वस्तु से यही सम्बन्ध यदि सही ढंग से नहीं देखा तो वस्तु चित्रण गलत साबित होगा। उदाहरण के लिए एक गिलास और एक गेन्द वस्तु समूह के रूप में ड्राईंग के लिए रखा हुआ है। आपने गिलास का और गेन्द का अपना लम्बाई, चौड़ाई और ऊंचाई का सम्बन्ध तो ठीक बनाया है परन्तु गेन्द, गिलास से बड़ी बना दी तो वह वास्तविकता से दूर हो जाएगा। अतः वस्तु चित्रण में अनुपात और समानुपात का भी विशेष ध्यान रखना है।

4. परिप्रेक्ष्य या दृष्टिक्रम (Perspective)— वस्तुओं को आँख जिस तरह से देखती है ठीक उसी तरह से उनको अंकित करने की विद्या को परिप्रेक्ष्य (Perspective) कहते हैं। यह

बहुत गहरा नियम है। वस्तु चित्रण में इसका बहुत उपयोग होता है। परिप्रेक्ष्य के कुछ उदाहरण इस प्रकार से हैं :-

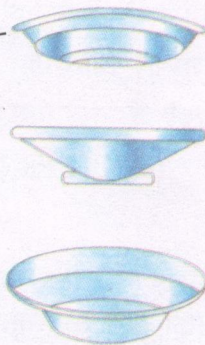
- (1) रेल की पटरी के बीच में खड़े होकर अगर हम पटरी को दूर तक देखें तो ऐसा लगता है कि दोनों लाइनें अन्त में जाकर मिल रही हैं। परन्तु वास्तव में ऐसा है नहीं। वे तो दोनों पटरियाँ बिल्कुल समानान्तर चलती हैं वरना रेल दुर्घटना हो जाएगी।



(1) आयताकार वस्तु

(2) गोलाकार वस्तु

“दृष्टि रेखा सिद्धान्त”

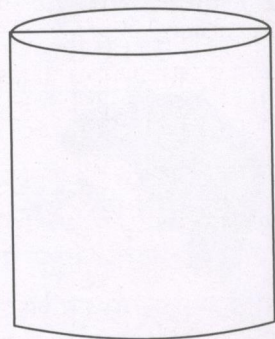
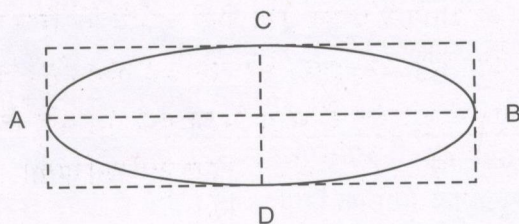


- (2) मैदानों में या थोड़ी जगह पर सड़क के किनारे लगे बिजली के खम्भों को देखें तो सामने खम्भा बड़ा नज़र आएगा और दूर का खम्भा छोटा। परन्तु वास्तव में इनकी ऊंचाई बराबर होती है।
- (3) सड़क पर बहुत सारे लोग जा रहे हों तो समीप वाले बड़े नज़र आयेंगे और दूर वाले छोटे जब कि सभी की ऊंचाई लगभग समान ही है। इसी प्रकार गहराई से देखने पर कई और उदाहरण आपको स्वयं मालूम होते रहेंगे।

परिप्रेक्ष्य (Perspective) के इस नियम को कुछ चित्रों द्वारा भी समझाने का प्रयास किया जा रहा है।

(1) चौकोर वस्तुओं पर दृष्टिक्रम का प्रभाव – किसी भी चौकोर वस्तु की आधारवत (Horizontal) समानान्तर रेखाएँ दूर जाकर संकरी होती जाती हैं। चौकोर वस्तु की सभी लम्बवत रेखाएँ (Vertical lines) आधार रेखा पर लम्ब होती हैं। वस्तु को किसी भी दिशा में रखा जाए, इस नियम में कोई अन्तर नहीं पड़ता। पुस्तक, ईंट, डिब्बा, सन्दूक आदि वस्तुएँ चौकोर हैं।

(2) रम्भाकार वस्तुओं पर दृष्टिक्रम का प्रभाव – रम्भाकार वस्तुओं पर दृष्टिक्रम का प्रभाव उनके मुँह तथा पेंदे के आकारों पर पड़ता है। दृष्टि रेखा (Eye-level) की सीध में होने पर बेलनाकार या गोलाकार वस्तु का मुँह एक सीधी रेखा में दिखाई पड़ता है। परन्तु ज्यों-ज्यों वह वस्तु दृष्टि रेखा से नीचे या ऊपर होती जाती है उनकी गोलाई बढ़ती जाती है। जैसा कि चित्र में दिखाया गया है। रम्भाकार या गोलाकार वस्तुओं के मुँह बनाने का तरीका सही होना चाहिए। यह निरन्तर अभ्यास के बाद ही ठीक ढंग से बन सकता है। अपनी (Sketch Book) में पेन्सिल, या Sketch Pen से स्वतन्त्र हाथ से गोलाई तथा अण्डा आकृति बार-बार बनाई जाए। गोलाकार वस्तु



की सारी सुन्दरता या प्रभावकारी वाला भाग उसका मुँह और पेन्दा ही है। यदि ये दोनों सही व सुन्दर बन गए तो सारी वस्तु की आकृति उजागर हो जाएगी। मुँह की गोलाई A और B बिन्दु पर चोंच या कोण जैसा नहीं बनाना चाहिए। इससे वस्तु की सारी सुन्दरता समाप्त हो जाती है। पेन्दे की गोलाई मुँह की गोलाई से थोड़ी अधिक होनी चाहिए।

5. प्रकाश व छाया (Light and Shade) – वस्तु समूह का रेखांकन करने के पश्चात् चित्र में वास्तविकता लाने के लिए प्रकाश एवं छाया का प्रयोग किया जाता है। प्रकाश एवं छाया से वस्तु की गोलाई, गहराई आदि स्पष्ट हो जाती है वरना वह वस्तु सपाट सी नज़र आएगी। वस्तु चित्रण के लिए प्रायः बाईं ओर से प्रकाश को दर्शाया जाता है। पूरे वस्तु समूह पर पहले यह देखो

सबसे अधिक प्रकाश कहाँ-कहाँ पड़ रहा है। उन भागों को इस प्रकार सुरक्षित रखना है कि छाया दर्शाते समय उन स्थानों पर पेन्सिल या रंग न लगे। उसके बाद सबसे अधिक गहराई या छाया वाले भाग देखें। अब अति प्रकाश और अति छाया वाले भागों के बीच में जो स्थान बच गया है वह भाग मध्यतान का है। उस भाग को धीरे-धीरे छाया से प्रकाश की ओर लाएँ। परन्तु ध्यान रहे अति प्रकाश वाले भाग को बिल्कुल न छेड़ा जाए। प्रकाश व छाया पेन्सिल से कई प्रकार से किया जा सकता है। समानान्तर रेखाओं द्वारा, बिन्दुओं द्वारा तथा धीरे-धीरे पोत को मिलाते हुए किया जाता है। चमकदार वस्तुओं जैसे शीशे की वस्तुएँ, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ आदि पर ऊपर से नीचे की ओर पेन्सिल या ब्रुश चलाया जाए। बाकी वस्तुओं पर पेन्सिल की वस्तुएँ, चीनी मिट्टी की वस्तुएँ आदि पर ऊपर से नीचे की ओर पेन्सिल या ब्रुश चलाया जाए। बाकी वस्तुओं पर पेन्सिल या ब्रुश बाईं ओर से दाईं ओर या फिर दाईं ओर से बाईं ओर चलाया जाए। परन्तु प्रत्येक स्थिति में पेन्सिल व ब्रुश को वस्तु के बाहरी रेखा के समानान्तर चलाना चाहिए। अतः प्रकाश व छाया को तीन मुख्य भागों में बांटा जा सकता है :-

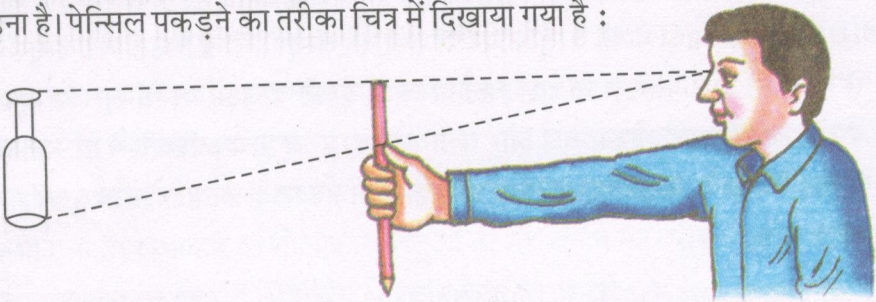
(1) अतिप्रकाश (High Light) (2) मध्यतान (Middle tone) (3) गहराई (Depth)।

6. सामान्य प्रभाव (General Impression) — कला कृति में सामान्य प्रभाव (General Impression) का सबसे प्रथम स्थान है। किसी भी चित्र को देखते ही आप के दिल में क्या प्रभाव पड़ता है वही सामान्य प्रभाव कहलाएगा। चित्र का सामान्य प्रभाव ऐसा होना चाहिए कि चित्र पर दृष्टि पड़ते ही उसको उठाकर देखने या बार-बार देखने की इच्छा करे और यह तभी होगा जब उपरोक्त नियमों का पालन करते हुए स्वच्छता एवं सुन्दरता से कार्य किया गया हो। यदि चित्र दर्शक को स्वतः ही आकृष्ट नहीं करता तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि चित्र सफल नहीं बन पाया।

वस्तु चित्रण (Still Life) प्रारम्भ करने से पहले ध्यान रखने योग्य बातें :-

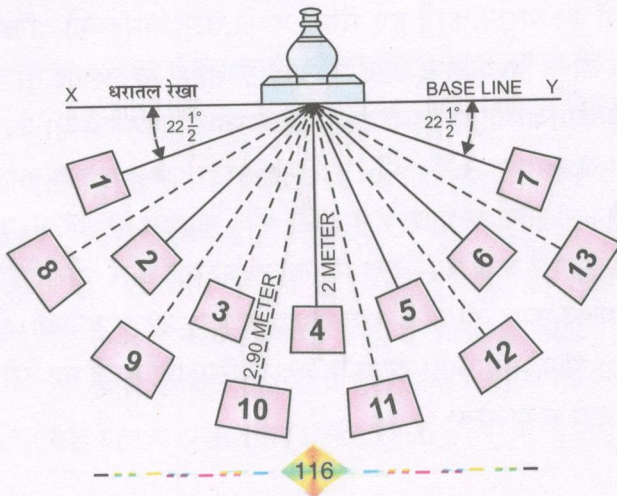
उपरोक्त नियमों का पालन करते हुए सबसे पहले वस्तु समूह को देखिए, बार-बार गहरी दृष्टि से देखिए, फिर सोचो कि कागज कैसा रखना है ऊँचाई में या लम्बाई में। यदि वस्तु समूह की ऊँचाई अधिक है तो कागज भी ऊँचाई में रखें और लम्बाई अधिक है तो कागज को लम्बाई में रखें। अब चारों ओर से लगभग 3 सें० मी० हाशिया छोड़ो। वस्तु चित्रण आरम्भ करने के लिए आधार रेखा (Base line) नीचे के हाशिये से 3 सें० मी० की दूरी पर खींचो। अब वस्तु समूह की पूरी लम्बाई नाप कर कागज के बीचों-बीच में रखो ताकि बाईं ओर और दाईं ओर बराबर स्थान छूटे। फिर ऊँचाई नापकर ऊपर की ओर वस्तु समूह के लिए स्थान बनाओ। ध्यान रहे पूरा वस्तु चित्रण कागज के 3/4 भाग में ही बने। नापने के लिए पेन्सिल पकड़ने का तरीका भी समझना है वरना आप सही नाप नहीं ले पाओगे।

नापने का तरीका – वस्तु समूह की लम्बाई और चौड़ाई के अनुपात को मालूम करने के लिए अपने स्थान से ही माप लिया जाता है। अपने स्थान पर सीधे बैठकर अपना दायां हाथ वस्तु समूह की ओर सीधा आगे फैलाओ। हाथ में दिए हुए चित्र के अनुसार पेन्सिल पकड़ो, और दाईं आँख से वस्तु समूह को देखो। जिस वस्तु का नाम लेना है उसका सिरा और पेन्सिल के सिरे को एक सीध में लेकर, फिर अंगूठे को धीरे-धीरे खिसकाते जाओ। जब उस वस्तु का पेन्दा नज़र आए तो अंगूठे को रोक दो। अब इस नाप का अनुपात दूसरे वस्तुओं से मिलाओ। ऊँचाई नापने के लिए पेन्सिल को लम्बवत (Vertically) और लम्बाई नापने के लिए आधारवत (Horizontally) पकड़ना है। पेन्सिल पकड़ने का तरीका चित्र में दिखाया गया है :

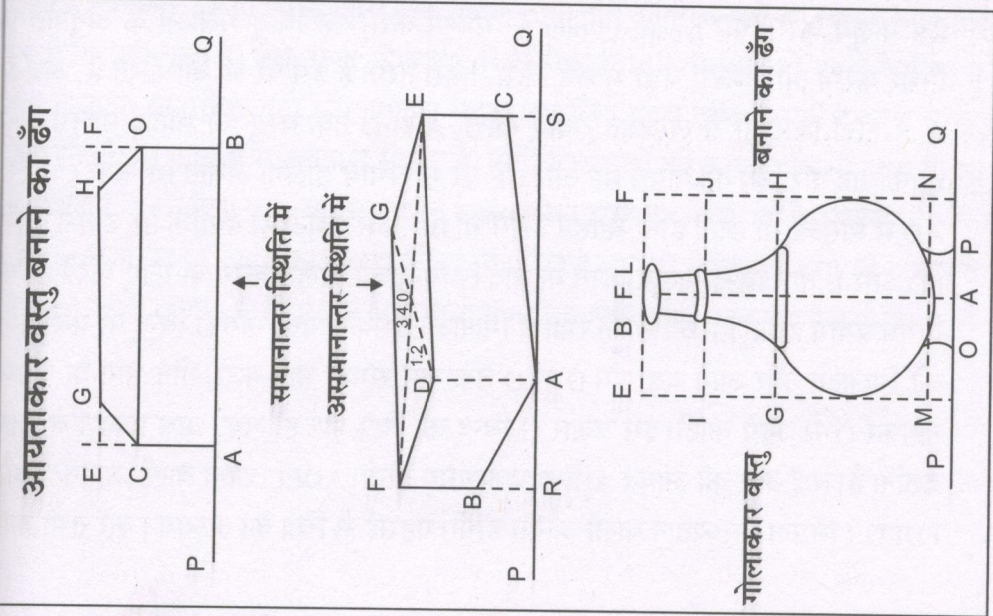
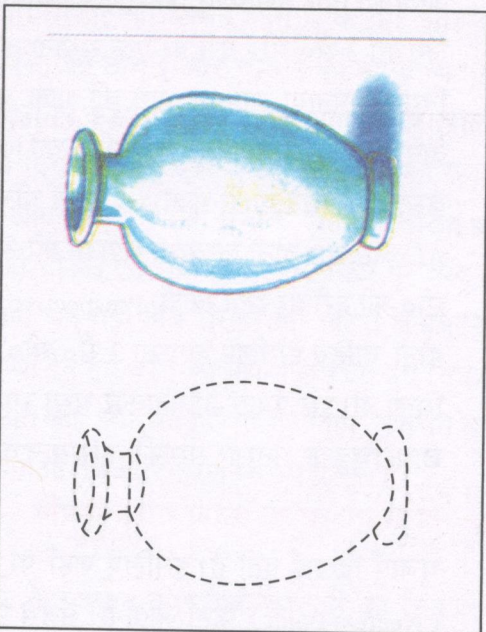
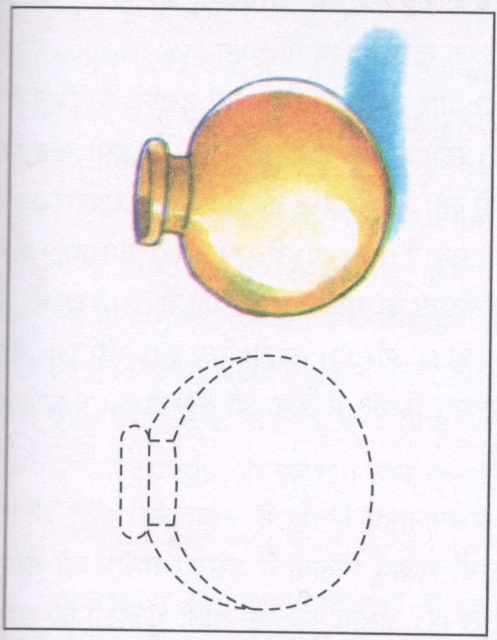


इस प्रकार जब आप नाप लेकर अनुपात, समानुपात ठीक मालूम कर लेते हैं, तब हल्की पेन्सिल से रेखाँकर करके वस्तुसमूह को पूरा कर लो। फिर दोबारा सारी (Drawing) को Check करो कि कहीं गलती तो नहीं रह गई। इसके बाद पेन्सिल से प्रकाश छाया या रंग से पूर्ण करो। रेखांकन (Drawing) जितना ठीक होगा वस्तु चित्रण उतना ही सफल होगा।

वस्तुचित्रण के लिए बैठने का प्रबन्ध – वस्तुचित्रण के लिए अर्द्धवृत्त की गोलाई में बैठने का प्रबन्ध होता है। 6 फुट से लगभग सामने वस्तुचित्रण करने के लिए वस्तुएँ रखी जाती हैं। बैठने के लिए दो दीर्घाएँ होती हैं। पहली दीर्घा में 7 और दूसरी में 6 विद्यार्थी बैठते हैं। प्रत्येक विद्यार्थी को वस्तुएँ अपने-अपने स्थान से पृथक अवस्था में दिखाई देंगी जिस प्रकार नीचे चित्र में दिखाया गया है।



वस्तुचित्रण अपने स्थान से बनाने का ढंग - वस्तु चित्रण के लिए बैठने का प्रबन्ध ऊपर वाले चित्र में आप अब स्वयं गहराई से देखें, प्रत्येक विद्यार्थी को वस्तुओं की स्थिति एक जैसी नहीं लगेगी। आयताकार डिब्बा स्थान नं० 4 के समानान्तर है इसलिए बाईं ओर, और दाईं ओर के स्थानों अर्थात् स्थान नं० 1, 2 और 6, 7 को आयताकार डिब्बा असमानान्तर या कोण पर दिखाई देगा। यहां पर एक वस्तु की दो अवस्थाएँ आई हैं उनके बारे में थोड़ी जानकारी प्राप्त करें।



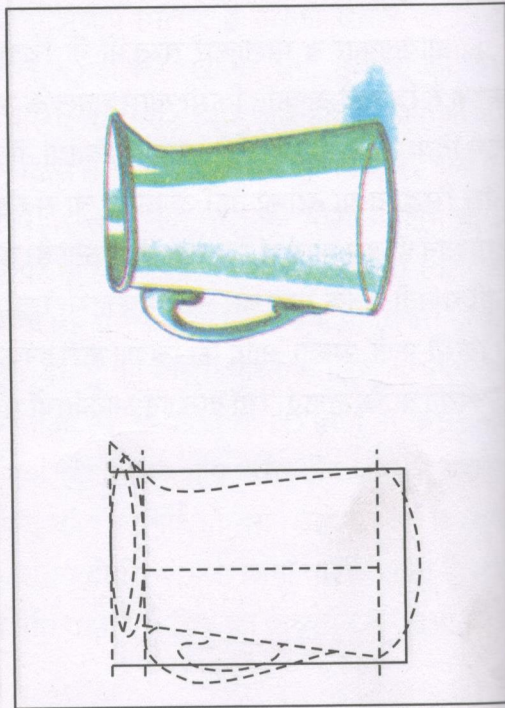
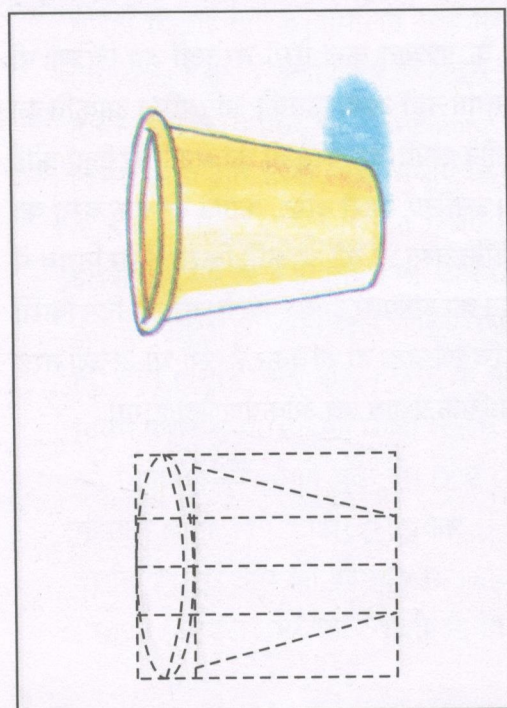
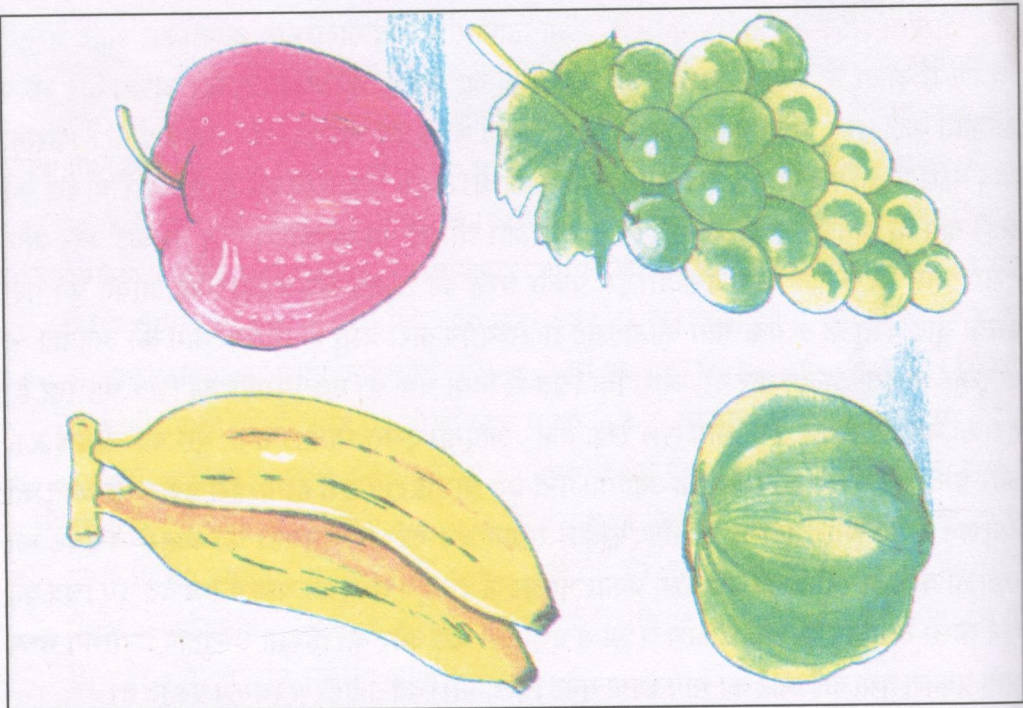
1. समानान्तर स्थिति – आयताकार वस्तुओं में एक स्थिति का नाम समानान्तर दिया गया है। इसमें उस वस्तु की एक भुजा आपके समानान्तर अर्थात् कागज के किनारे के समानान्तर होती है। इस स्थिति में आयताकार वस्तु की एक ही भुजा सामने दिखाई देती है। बाईं तथा दाईं ओर की कोई भुजा दिखाई नहीं देती। सामने वाली भुजा आधार रेखा के समानान्तर बनाई जाती हैं। फिर उस वस्तु की मोटाई तथा लम्बाई नाप कर बनाओ। मोटाई बनाने के प्रश्चात् लगभग 3 सैं० मी० दूरी पर एक समानान्तर रेखा खींचो। अब परिप्रेक्ष्य (Perspective) का नियम अपनाया जाएगा। आगे की भुजा बड़ी और दूर की भुजा छोटी दर्शानी है। चित्र के अनुसार आपको समझाने का प्रयोग करें। PQ रेखा आधार रेखा Base line है। इसी रेखा पर वस्तु की सामने वाली भुजा AB बीचों बीच में लो। AB से वस्तु की मोटाई CD मालूम करो। AC और BD दोनों लम्बवत रेखाओं को आगे बढ़ा दें। फिर CD से समानान्तर लगभग 3 सैं० मी० की दूरी पर रेखा खींचें। Perspective के नियम के अनुसार CD रेखा से GH रेखा छोटी होनी चाहिए इसलिए लगभग 2 सैं० मी०, E से G और FH काटो। फिर CG और DH को मिला दो। इस प्रकार आयताकार वस्तु समानान्तर स्थिति में तैयार हो गई। इसको प्रकाश व छाया चित्र के अनुसार समझने का प्रयत्न करें।

2. असमानान्तर या कोण वाली स्थिति – असमानान्तर स्थिति में आयताकार वस्तु की दो भुजाएँ दिखाई देती हैं। इसलिए जहाँ पर दोनों भुजाएँ मिलती हैं उसको समीप का बिन्दु (Nearest Point) कहा जाता है। सबसे पहले PQ आधार रेखा पर दोनों भुजाओं का योग RS मालूम करो। फिर Nearest Point A मालूम करो। यह बिन्दु भुजाओं के अनुपात पर निर्भर करेगा और छोटी, बड़ी भुजाएँ किस-किस तरफ हैं इस पर भी आधारित है, अब R, A, S तीनों बिन्दुओं से लम्बवत रेखाएँ खींचें, A से D तक वस्तु की मोटाई मालूम करो। इसके बाद परिप्रेक्ष्य का नियम BF और CE पर भी प्रभाव डालेगा अर्थात् BF और CE रेखा AD से मामूली सी छोटी होनी चाहिए उसमें भी BF सबसे छोटी हो क्योंकि BF सबसे दूर है। FD और E तीन बिन्दु मालूम करने के बाद G बिन्दु को मालूम करने के लिए परिप्रेक्ष्य का नियम प्रयोग होगा। EF को सीधी रेखा में मिलाओ उसका आधा भाग O बिन्दु पर करो। DO को मिलाओ और आगे बढ़ा दो। D से O तक चार समान भाग करो, तीन भाग के बराबर नापकर O से आगे काटो। इस प्रकार G बिन्दु का चित्र पूर्ण हो गया। अब प्रकाश व छाया दर्शाना है। बाईं ओर की आयत ABFD प्रकाशमय होगी। ADEC छाया वाली आयत है और FDEG (मिडल) मध्यतान वाली आयत होगी। गहराई से चित्र का अध्ययन करें तभी का

गोलाकार वस्तुएँ बनाने के ढंग – आयताकार के बाद गोलाकार, अण्डाकार आदि वस्तुएँ चित्रण में आती हैं, और इनका भी ढंग समझाया जा रहा है जो कि गोलाकार अण्डाकार आदि आकृति वाले वस्तु पर लागू होगा। सभी वस्तु चित्रण में आधार रेखा PQ तो अवश्य होती है। उसके बाद मध्य में A बिन्दु से AB रेखा लम्ब रूप में खींचो। उसके बाद वस्तु की ऊँचाई और चौड़ाई की सही नाप के अनुसार एक आयत CDEF बनाओ। चौड़ाई का आधार भाग A के बाईं ओर और दूसरा भाग A के दाईं ओर बनाओ। इस प्रकार वस्तु की ऊँचाई और चौड़ाई की आयत बन गई। इसके बाद वस्तु के प्रत्येक भाग का गहराई से अध्ययन करें। वस्तु के प्रत्येक भाग को अनुपात के अनुसार अलग-अलग कर दो, जैसा कि चित्र में दिया गया है। एक सुराही का चित्र बन रहा है। उसका पेट का सबसे बड़ा भाग GH रेखा तक आएगा। दूसरा भाग IJ तक, मुँह की चौड़ाई KL और पेन्दा का भाग MN रेखा तक आएगा। पेन्दे की चौड़ाई OP तक होगी। इस प्रकार पूरे वस्तु की अनुपात के अनुसार बनावट के लिए संकेत रेखाएँ बन गईं। अब सुराही की बाहरी बनावट की रेखाओं को ध्यान से देखते हुए उसी प्रकार गोलाइयाँ देते हुए वस्तु को यथार्थ रूप देते हुए चित्र को पूर्ण करो। रेखांकन के बाद प्रकाश व छाया दर्शाओ। बाईं ओर का हिस्सा मध्यतान, लगभग मध्य भाग प्रकाश तथा दाईं ओर का भाग छाया युक्त दिखाओ। चित्र उदाहरण स्वरूप प्रस्तुत है।

अनियमित आकृति वाली वस्तुओं का चित्रण :-

आयताकार व गोलाकार वस्तुओं के चित्रण के पश्चात् कुछ ऐसी वस्तुओं का चित्रण भी करना है जिनकी आकृति किसी खास शकल के अन्तर्गत नहीं आती। उनको अनियमित आकृति का नाम दिया जा सकता है। जैसे-फल, सब्जियाँ, खिलौने आदि। इन वस्तुओं को बनाने के लिए कोई ठोस सिद्धान्त या तरीका नहीं अपनाया जा सकता। इसलिए गहरी दृष्टि, काफी देर तक वस्तु का अध्ययन ही इस कार्य में सफलता दे सकता है। क्योंकि वस्तुओं की आकृति किसी खास नियम में नहीं चलती, इनके लिए बार-बार मुक्तहस्त रेखांकन का अभ्यास आवश्यक है। प्रत्येक दिन किसी न किसी फल, सब्जी आदि का चित्रण करें। इनका चित्रण बड़ा ही रुचिकर है। रंग भी अच्छी तरह अध्ययन करके लगाएं, रंगों द्वारा इन आकृतियों में अधिक प्रभाव एवं आकर्षण पैदा होगा।



सफल कार्य के लिए संक्षिप्त संकेत :-

1. चित्र आरम्भ करने से पहले आवश्यक एवं उचित सामग्री पहले ही तैयार रखें।
2. वस्तुसमूह को गहरी दृष्टि से देखकर अपने मस्तिष्क में उनकी सही आकृति लाने का प्रयत्न करें।
3. केवल वस्तु को नापते समय ही नहीं अपितु पूरे कार्य करते समय कमर सीधी रखकर कार्य करें।
4. कुछ देर कार्य करने के बाद दूर से अपने चित्र का अवलोकन एवं मनन करो, बहुत सी त्रुटियां स्वयं आंखों को खटकेंगी।
5. कागज़ को घुमा-घुमाकर कार्य न करें, केवल हाथ को ही विभिन्न दिशाओं में घुमाकर कार्य करना चाहिए।
6. वस्तु समूह में जितनी भी वस्तुएं हैं चाहे उनका कुछ भाग दूसरी वस्तु से छिपा हुआ हो परन्तु आप उनका पहले पूर्ण चित्र बनाओ फिर छिपे हुए भाग को बाद में मिटाओ।
7. पहले बिल्कुल हल्की रेखाओं का प्रयोग करें ताकि रबड़ लगाने की अधिक आवश्यकता न पड़े। जिस कागज़ पर अधिक रबड़ का प्रयोग हो जाएगा उसमें कार्य उजागर नहीं हो सकता।
8. प्रकाश व छाया चाहे किसी भी माध्यम से दिखा रहे हो उसके बाद वस्तुओं की बाहरी आकृति की रेखाएं नज़र नहीं आनी चाहिए वह प्रकाश व छाया के साथ मिल जानी चाहिए।
9. प्रकाश व छाया दर्शाते समय, (Light against dark) अर्थात प्रकाश के विपरीत छाया का नियम ध्यान में रखना आवश्यक है।
10. कार्य में स्वच्छता रखने के लिए साफ रूमाल का कागज़ के ऊपर होना आवश्यक है।
11. कार्य पूर्ण होने के बाद आप का Presentation ढंग बहुत सुन्दर एवं मनमोहक होना चाहिए, चाहे आप अपना कार्य उसी अध्यापक को दिखा रहे हैं या परीक्षा में निरीक्षक को भेज रहे हैं। चारों ओर हाशिया हो, अपना रोल नम्बर इत्यादि कागज़ के दाईं ओर ऊपर के सिरे पर बहुत सुन्दर अक्षरों से साफ-साफ लिखा हो। इस प्रकार यह छोटी-छोटी बातें भी General Impression को बहुत बढ़ावा देती हैं। इससे आन्तरिक कई सूक्ष्म त्रुटियां भी ओझल हो जाती हैं। इस प्रकार कार्य करने से आप अच्छे अंक तो प्राप्त करेंगे ही परन्तु साथ ही प्रशंसा के पात्र भी बनेंगे।

1. आयताकार एवं वर्गाकार वस्तुएं :-

ड्राईंग बोर्ड, पुस्तक (विभिन्न आकार) की घनाकार, चाय का डिब्बा, लकड़ी का बना घन, लकड़ी के आयताकार संक्षेत्र, ईंट, पीपा आदि।

2. गोलाकार, अण्डाकार एवं बेलनाकार वस्तुएं :-

अनेक आकृति वाली बड़ी बोतलें, विभिन्न शक्ल की छोटी शीशियां, गिलास, लोटा, छोटी बाल्टी, चाय की प्याली, प्लेट, पतीला, पीक, सुराही, जग, मग, लैम्प, चाय की केतली, डालडा का टीन, कटोरी, चम्मच, गोंददानी, थर्मस, अचारदानी, घड़ा आदि।

3. अनियमित आकृति वाली वस्तुएं :-

सभी फल :- केला, आम, संतरा, अमरूद, अनार, सेब, अंगूर, आड़ू आदि।

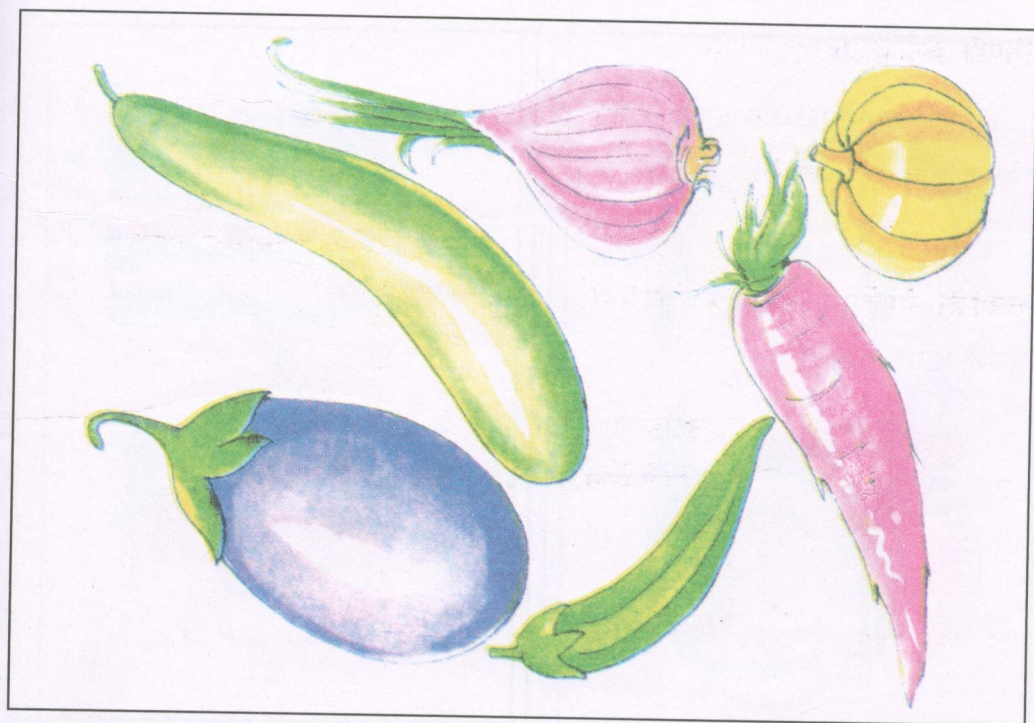
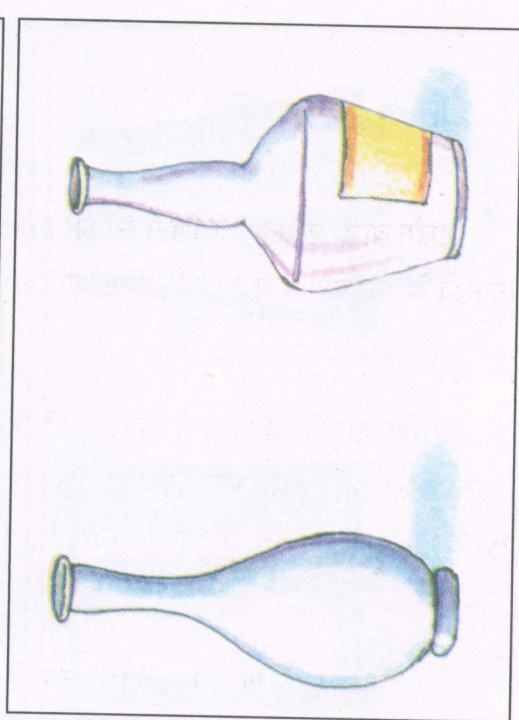
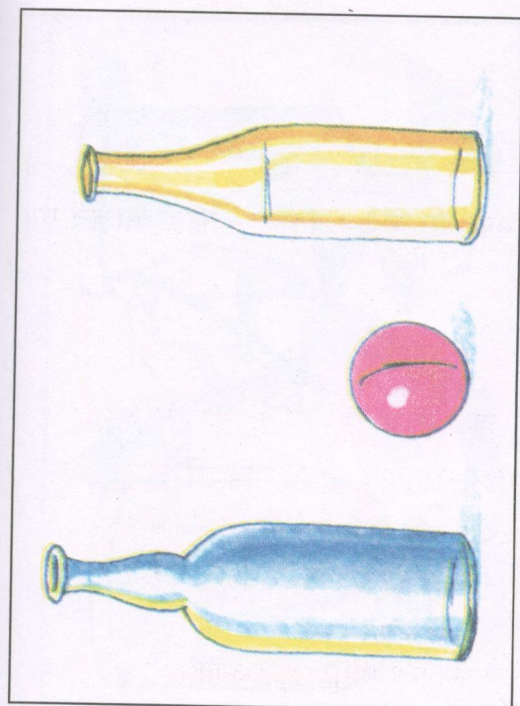
सभी सब्जियां :- आलू, घिया (लौकी), करेला, मूली, गाजर, टमाटर, गोभी, प्याज, भिण्डी, कटा हुआ कद्दू आदि।

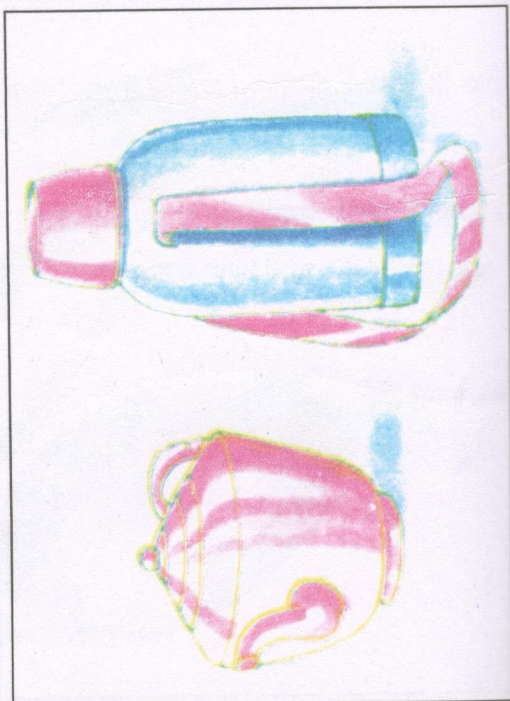
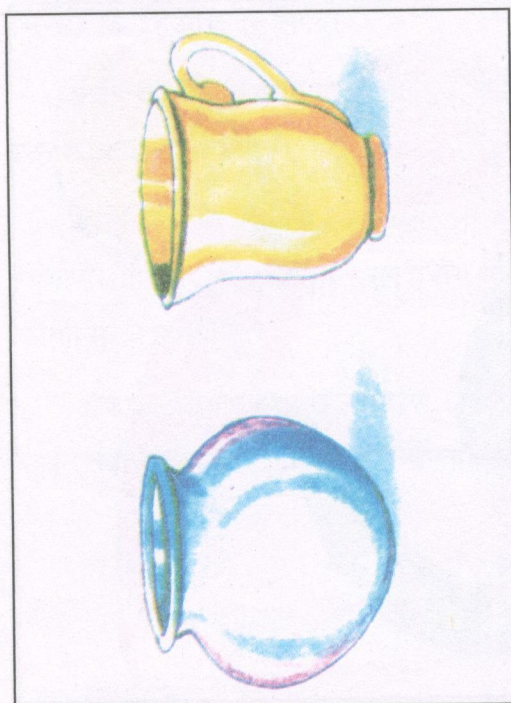
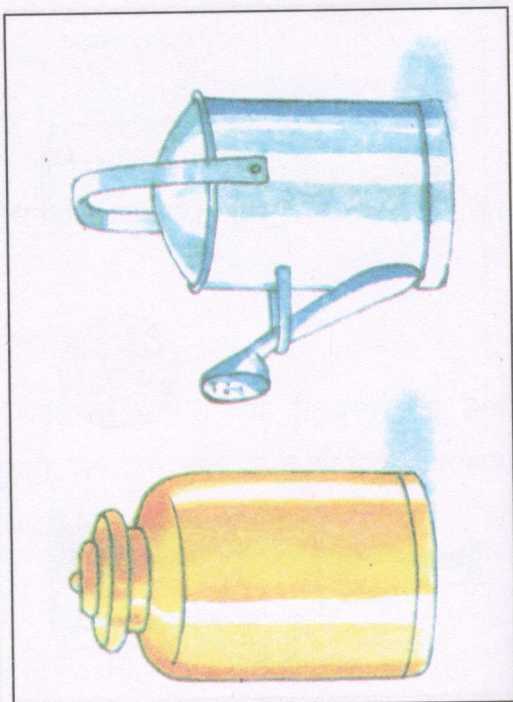
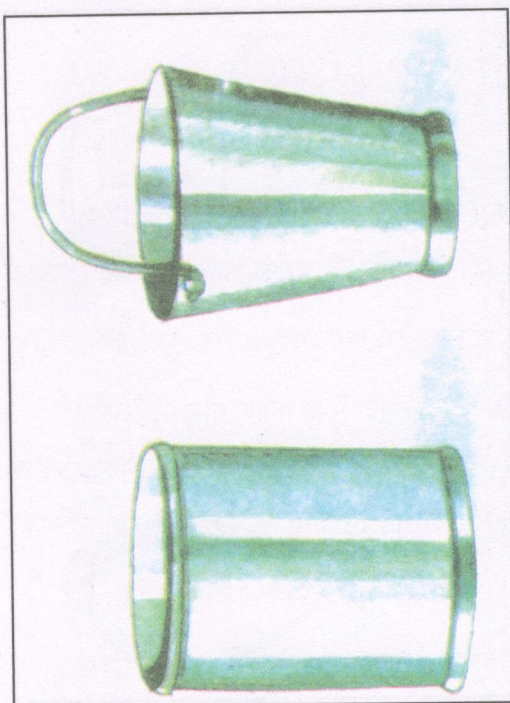
फूलों का भी अध्ययन करना चाहिए, कई बार फूलदान में कुछ फूलों को रखकर भी वस्तु चित्रण किया जा सकता है।

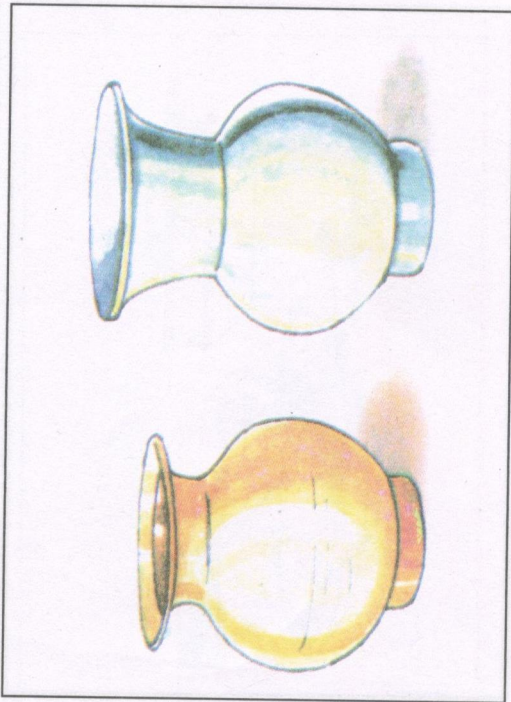
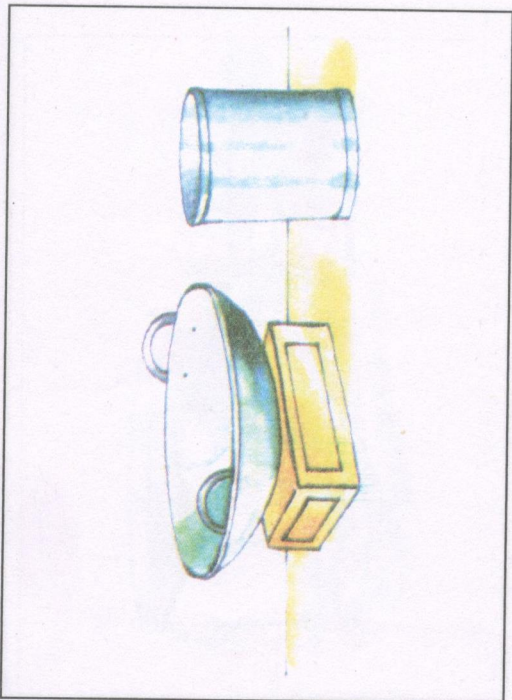
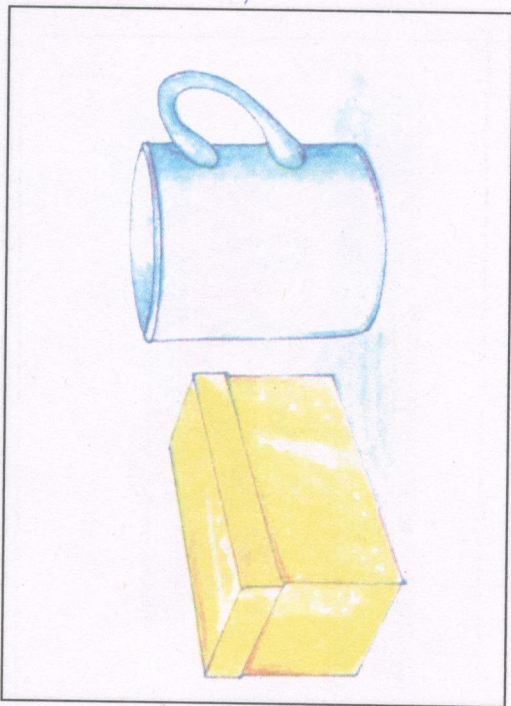
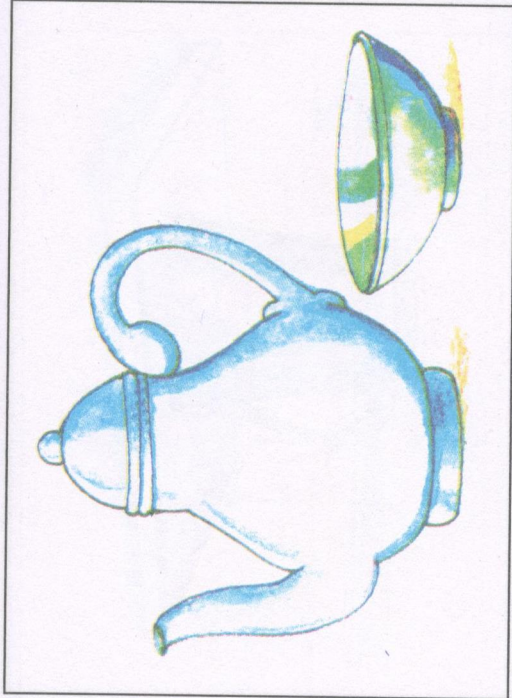
वस्तुचित्रण के लिए Model Stand भी यदि बनवाया जाए तो वस्तु समूह रखने में आसानी रहती है। और ड्रैपरी (Drapery) का प्रयोग भी होना चाहिए। इससे पार्श्व भूमि (Back Ground) काफी सुन्दर लगती है।

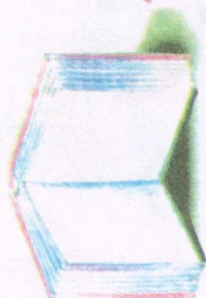
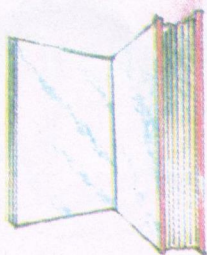
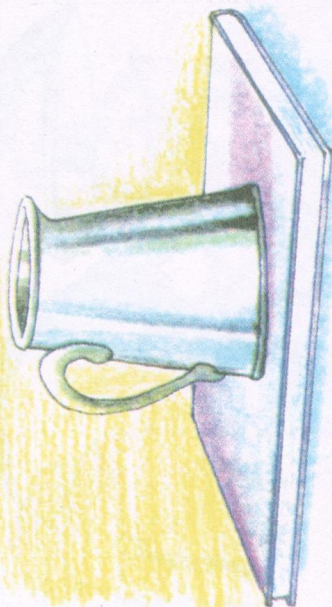
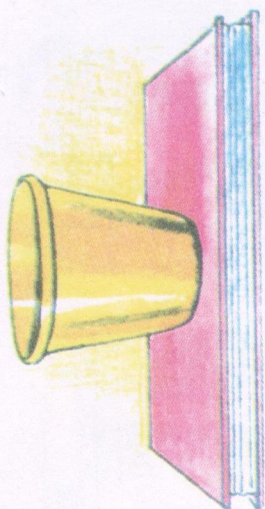
अब वस्तुचित्रण के कुछ उदाहरण, बनाने के तरीके से लेकर अन्तिम पूर्ण कार्य तक आपकी सृजन सहायता के लिए दिए जा रहे हैं इनको ध्यान से देखकर स्वयं कार्य में अपनाएं।

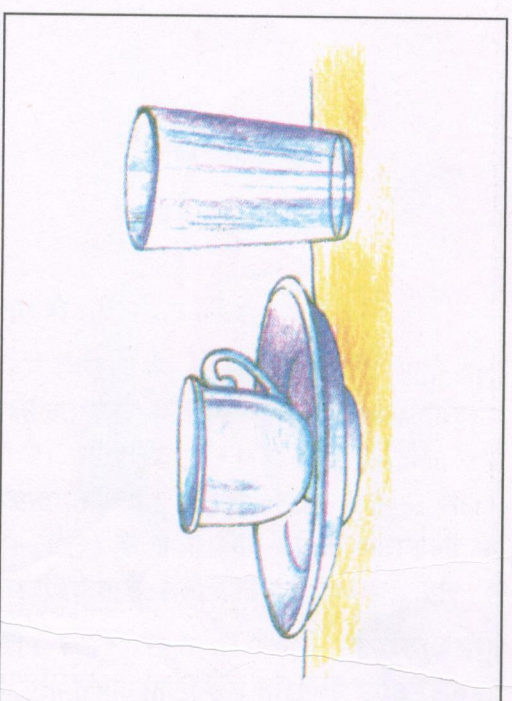
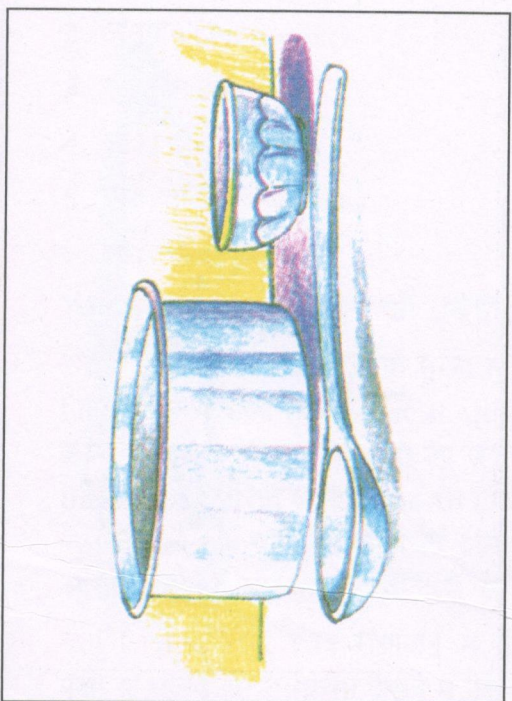
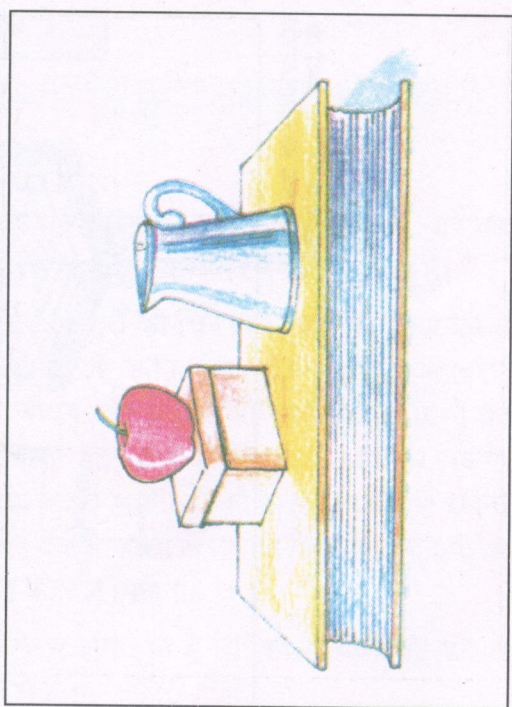
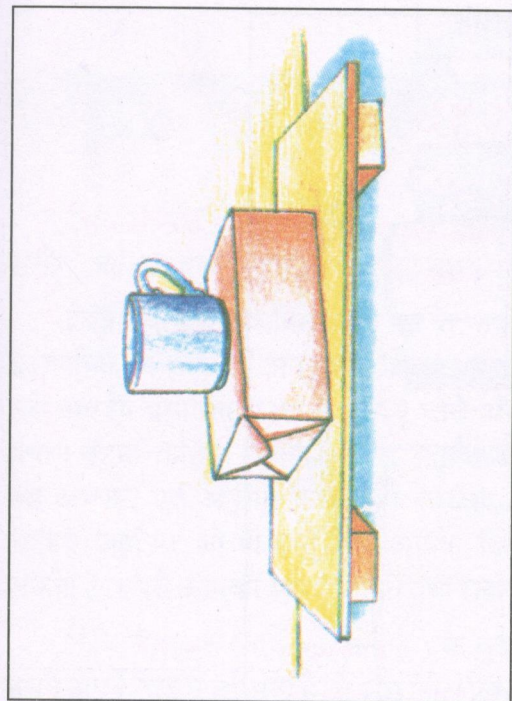












ROLL NO.
 SUBJECT ART 'B'
 MATRIC EXAMINATION

